



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग III—खण्ड 1
PART III—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

C. K. ...
26/12/84

सं० 34]
No. 34]

नई दिल्ली, बुधवार, दिसम्बर 13, 1984/अग्रहायण 22, 1906
NEW DELHI, THURSDAY, DECEMBER 13, 1984/AGRAHAYANA 22, 1906

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

कार्यालय सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण) अर्जुन रेज, जयपुर
[आयकर अधिनियम (1961 का 43) की धारा 269ख (1) के
अधीन सूचना]

जयपुर, 4 दिसम्बर, 1984

आदेश संख्या राज/सहा./आ अर्जुन/2510—अतः मुझे मोहन सिंह,
आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे हमने इसके पश्चात्
'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269ख के अधीन सक्षम
प्राधिकारी का, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका मूल्य
1,00,000 रु से अधिक है और जिसका सं. टुकान न. 7 है तथा जो पीलीबंगा
में स्थित है, (और हमने उपावद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है)
रजिस्ट्रार अधिवासी के कार्यालय सूरसगढ़ में, रजिस्ट्रार अधिनियम
1908 (1908 का 16) के अर्धीन तारीख 14-3-1984 का पूर्वोक्त
संपत्ति के उचित बाजार मूल्य में कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित
की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति
का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के
पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है, और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिनी
(अन्तरिणियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल,
निम्नलिखित उद्देश्य में उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप में कथित
सही किया गया है :—

(क) अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम
1961 (1961 का 43) के अर्धीन कर देने के अन्तरक

के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए
और/या

(ख) ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें
भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या
आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) या धनकर
अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिनी
द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था,
छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269ग के अनुसारण में,
मैं उक्त अधिनियम की धारा 269ख की उपधारा (1) के अधीन, निम्न-
लिखित व्यक्तियों, अर्थात् :—

- (1) श्री चैतरुप पुत्र श्री सुगत चन्द्र जी बाठिया निवासी पीलीबंगा
जिला श्री गंगानगर (अन्तरक)
- (2) श्री कन्हैयालाल, श्री जगदीश प्रसाद पुत्रान श्री
पिरगञ्जन्द जी निवासी पीलीबंगा (अन्तरिनी)
- (3) श्री/श्रीमती/कुमारी..... (वह व्यक्ति जिसके
.....अधिभोग में संपत्ति है)
- (4) श्री/श्रीमती/कुमारी..... वह व्यक्ति जिसके
.....बारे में
....., अधोहरताक्षरी जानता है कि वह संपत्ति में
हितवद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए कार्यवाहियाँ करता है उक्त संपत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :

(क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की अवधि या तत्संबंधी व्यक्तियों पर सूचना की तारीख से 30 दिन की अवधि, जो भी अवधि बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा।

(ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा, अधोहस्ताक्षरी के पास निश्चित में किये जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण : इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित हैं, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

दुकान न. 7 स्थित धानमंडी, पीलीबंगा जिला श्रीगंगानगर या उप पंजीयक, सुरतगढ़ द्वारा क्रम संख्या 251 विनोक 14-3-84 द्वारा पंजीयक विवरण पत्र में ओर विस्तृत रूप में विवरणित है।

OFFICE OF THE I.A.C. ACQUISITION RANGE,
CENTRAL REVENUE BUILDING, STATUE CIRCLE,
JAIPUR

[Notice under section 269D (I) of the Income Tax Act, 1961
(43 of 1961)]

Jaipur, the 4th December, 1984

Ref. No. : Rej/IAC (Acq.) 2510—Whereas, J Mohan Singh, being the competent authority under Section 269B of the Income-Tax, Act 1961 (43 of 1961) (herein-after referred to as the said Act), have reason to believe that the immovable property, having a fair market value exceeding Rs. 1,00,000/- and bearing No Shop No. 7 situated at Peelibanga (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Suratgarh on 14-3-1984 for an apparent consideration which is less than the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that the fair market value of the property as aforesaid exceeds the apparent consideration there of by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of :—

- facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the transferee for the purpose of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the wealth-tax; 1957 (27 of 1957);

Now, therefor, in pursuance of section 269 C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said Act to the following persons, namely :—

- Shri Chainroop S/o Shri Sugan chand Bathia
R/o Peelibanga. (Transferor)
- Shri Kanhaiyalal & Shri Jagdish Prasad S/o Shri Piragchand R/o Peelibanga. (Transferee)

(3) Shri/Shrimati/Kumari (Person in occupation of theproperty)

(4) Shri/Shrimati/Kumari.....(Person whom the under..... signed knows to be interested in the property)

objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :—

(a) by any of the aforesaid person within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;

(b) by any other persons, interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

Explanation :—The terms and expressions used herein as are defined in chapter XXXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Portion of Shop No. 7 situated in Dhanmandi, Peelibanga, District-Sriganganagar and more fully described in the sale deed registered by the Sub-Registrar, Suratgarh vide Registration No. 851 dated 14-3-1984.

आदेश संख्या : राज./महा / आ. अर्जन/2509.—अतः मुझे मोहन सिंह आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे हमें इसके पश्चात् 'उक्त अधिनियम' कहा गया है) की धारा 269B के अधीन सक्षम प्राधिकारी, को यह विश्वास करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका मूल्य 1,00,000 रु. से अधिक है और जिसकी सं. दुकान नं. 7 है तथा जो पीलीबंगा में स्थित है, (और इससे उपबाद्ध अनुसूची में और पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय सुरतगढ़ में, रजिस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख 14 मार्च 1984 को पूर्वोक्त संपत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त संपत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से अधिक है, और अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरिणी (अन्तरिणियों) के बीच ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखित में वास्तविक रूप से कथित नहीं किया गया है :—

- अन्तरण से हुई किसी आय की बाबत, आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए और/या
- ऐसी किसी आय या किसी धन या अन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय आयकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) या धनकर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिणी द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए।

अतः अब उक्त अधिनियम की धारा 269B के अनुसरण में, मैं उक्त अधिनियम की धारा 269B की उपधारा (1) के अधीन, निम्नलिखित व्यक्तियों, अर्थात् :—

- श्री चैतरूप पुत्र श्री सुगनचन्द बाटिया निवासी पीलीबंगा जिला श्रीगंगानगर (अन्तरक)

(2) श्री चेतनदाम कन्हैयालाल पुत्रान श्री पिरागचन्द
निवासी पीलीबंगा (अंतरिती)

(3) श्री/श्रीमती/कुमारी (वह व्यक्ति जिसके अधिभोग
. में संपत्ति है)

(4) श्री/श्रीमती/कुमारी (वह व्यक्ति जिसके बारे में
. अधोदस्ताक्षरी जानता है कि वह संपत्ति में हितबद्ध है)।

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त संपत्ति के अर्जन के लिए
कार्यवाहियां करता है उक्त संपत्ति के अर्जन के संबंध में कोई भी आक्षेप :

(1) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की
अवधि या महसुबंदी व्यक्तियों पर सूचना की तारीख से 30
दिन की अवधि, जो भी अवधि बाध में समाप्त होती हो, के
भीतर पूर्वोक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा।

(क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के
भीतर उक्त स्थावर संपत्ति में हितबद्ध किसी अन्य व्यक्ति द्वारा
अधोदस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण : इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो आयकर अधिनियम,
1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है,
वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

दुकान नं. 7 का भाग, धानमंडी, पीलीबंगा जिला श्रीगंगानगर जो उप
पंजीयक, सुरतगढ़ द्वारा क्रम संख्या 250 दिनांक 14-3-84 पर पंजीकृत
क्रय पत्र में और विस्तृत रूप में विवरणित है।

तारीख : 4-12-84

मोहन सिंह, सक्षम प्राधिकारी

मोहर

सहायक आयकर आयुक्त
(निरीक्षण) अर्जन रेंज, जयपुर

Ref. No.: Rej/IAC (Acq.) 2509—Whereas, I Mohan Singh,
being the competent authority under Section 269B of the
Income-Tax Act, 1961 (43 of 1961) (herein-after referred to as
the said Act), have reason to believe that the immovable
property having a fair market value exceeding Rs.1,00,000/- and
bearing No. Shop No. 7 situated at Peelibanga (and more fully
described in the schedule annexed hereto), has been transferred
under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the
Registering Officer at Suratgarh on 14-3-1984 for an apparent
consideration which is less than the fair market value of the
aforesaid property and I have reason to believe that the fair
market value of the property as aforesaid exceeds the apparent
consideration thereof by more than fifteen percent of such
apparent consideration and that the consideration for such

t has not been truly
stated in the said instrument of transfer with the object of:—

(a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the
transferor to pay tax under the said Act in respect of
any income arising from the transfer; and/or

(b) facilitating the concealment of any income or any
moneys or other assets which have not been or which
ought to be disclosed by the transferee for the purpose
of the Indian income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the
said Act or the wealth-tax, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269 C of the said
Act, I hereby inticate proceedings for the acquisition of the
aforesaid property by the issue of this notice hereby under
sub-section 1 of section 269D of the said Act to the following
persons, namely:

(1) Shri Chainroop S/o Shri Suganchand Bathia
R/o Peelibanga (Transferor)

(2) Shri Chctandas Kanhaiyalal S/o Shri Piragchand
R/o Peelibanga. (Transferee)

(3) Shri/Shrimati/Kumari (Person in
occupation of the.....property)

(4) Shri/Shrimati/Kumari..... (Person
whom the under..... signed
knows to be intereste in the property)

Objections, any, to the acquisition of the said property
may be made in writing to the undersigned:—

(a) by any of the aforesaid person within a period of 45 days
from the date of publication of this notice in the Official
Gazette or a period of 30 days from the service of notice
on the respective persons, whichever period expires
later;

(b) by any other persons, intereste in the said immovable
property, within 45 days from the date of the pub-
lication of the notice in the official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are
defined in chapter XXA of the said Act, shall
have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Portion of Shop No. 7 situated in Dhanmandi, Peelibanga,
District-Sriganganagar and more fully described in the sale deed
registered by the Sub-Registrar, Suratgarh vide Registration
No. 250 dated 14-3-1984.

MOHAN SINGH, Competent Authority
Inspection Assistant Commissioner of Income-tax
Date : 4-12-1984 Acquisition Range, Jaipur
Seal

